

## रॉबर्ट वैनॉय, प्रमुख भविष्यवक्ता, व्याख्यान 30—ईजेकील #6

यहेजकेल की व्याख्या करने के तरीके और समस्याएँ 40-48

### 2. यहेजकेल 40-48 की व्याख्या के संबंध में सुझाव

आइए 2 पर चलते हैं हमारी रूपरेखा पर: "यहेजकेल अध्याय 40-48 की व्याख्या के संबंध में सुझाव।" हमें इन नौ अध्यायों की बड़ी तस्वीर का अंदाज़ा मिल गया है। सवाल यह है कि यह सब क्या है? आपके पास एक दूरदर्शी शहर और एक दूरदर्शी मंदिर और इस दूरदर्शी स्थिति की एक निरंतर तस्वीर है जिसमें मंदिर से एक नदी बहती है जो कई लोगों के लिए उपचार और भोजन लाती है, लेकिन पूरी तरह से नहीं, क्योंकि दलदल अभी भी नमकीन है। फिर लोगों के बीच ज़मीन के बँटवारे का ख़्याल आता है। अब, मुझे लगता है कि यह स्पष्ट है कि ईश्वर यहेजकेल और उसके समय के लोगों को भविष्य की एक तस्वीर दे रहा है। जरूरी नहीं कि कोई स्पष्ट तस्वीर हो, जरूरी नहीं कि कुछ आसानी से समझ में आ जाए, लेकिन कम से कम कुछ तो है। यह दृष्टिकोण एक ऐसी चीज़ के रूप में महत्वपूर्ण है जो भविष्य के लिए प्रोत्साहन और आशा प्रदान करेगी। याद रखें कि वे कहँ हैं; वे निर्वासन में हैं. यरूशलेम नष्ट हो गया है. वे बहुत निराश और निराश हो सकते हैं और फिर भी, यहाँ कुछ ऐसी चीज़ की दूरदर्शी तस्वीर है जो भगवान भविष्य में करने जा रहे हैं। तो, भविष्य के लिए आशा है।

शाब्दिक व्याख्या के लिए वन्नॉय का साक्ष्य अब मूल प्रश्न यह है: क्या ईजेकील यह कहना चाह रहा है कि बहुत शाब्दिक, भौतिक अर्थ में यरूशलेम भविष्य में ऐसा दिखने वाला है? या, क्या यह एक प्रतीकात्मक तस्वीर है जो प्रतीकात्मक भाषा में कहती है कि भगवान अपने लोगों के साथ काम करना जारी रखेंगे, कि उनका अपने लोगों के साथ काम ख़त्म नहीं हुआ है? यद्यपि इस्राएल बन्धुवाई में जा रहा है फिर भी वह असफल नहीं हुआ है। मुझे लगता है कि शाब्दिक दृष्टिकोण के पक्ष में कई सटीक आयाम दिए गए हैं। इसमें बहुत सारे विवरण और विशिष्ट संदर्भ हैं। सटीक आयाम हैं; इसमें लेवियों और याजकों के कर्तव्यों का उल्लेख दिया गया है। बलिदान हैं. इस प्रकार के विवरण इस बात का समर्थन करते प्रतीत होते हैं

कि यह कुछ ऐसा है जो भविष्य में शाब्दिक रूप से घटित होने वाला है। यदि ऐसा मामला है, तो यह एम सहस्राब्दी में होने वाली किसी चीज़ की तस्वीर प्रतीत होगी क्योंकि निश्चित रूप से यह कुछ ऐसा नहीं था जिसे निर्वासन के बाद की वापसी में महसूस किया गया था। निर्वासन से लौटने के बाद मंदिर का पुनर्निर्माण निश्चित रूप से यहजेकेल की तस्वीर के अनुरूप नहीं था।

मैं इस बिंदु पर इसे योग्य नहीं बना पाऊंगा लेकिन बाद में इस पर वापस आऊंगा। यह ऐसा कुछ नहीं है जिसका एहसास वास्तव में निर्वासन के बाद की वापसी में हुआ हो। फिर भी जे. बार्टन पायने जैसे किसी व्यक्ति का कहना है कि यह कोई भविष्यवाणी नहीं है, बल्कि यह निर्वासन से वापसी के लिए एक निषेधाज्ञा या निर्देश है और निर्वासन से वापसी वैसी नहीं रही जैसा उन्हें करना चाहिए था। पायने का विचार यह नहीं है कि यह शाब्दिक रूप से सहस्राब्दी में क्या होने वाला है इसकी एक तस्वीर है, बल्कि यह उस बात की तस्वीर है जो निर्वासन से वापसी में होना चाहिए था लेकिन नहीं हुआ। मैं उस पर बाद में वापस आऊंगा।

लेकिन अगर यह एक शाब्दिक मंदिर की तस्वीर नहीं है जो सहस्राब्दी काल में होगा, बल्कि उन चीज़ों की एक प्रतीकात्मक तस्वीर है जो इज़राइल को भविष्य के लिए आशा देगी, तो मुझे नहीं लगता कि यह इस अर्थ में सहस्राब्दी शिक्षण को अस्वीकार कर देगा। ऐसे अन्य अनुच्छेद हैं जो सहस्राब्दी काल और इसराइल की भूमि पर वापसी के बारे में स्पष्ट रूप से बात करते हैं। चाहे यह अनुच्छेद ऐसा करता हो या नहीं, यह वास्तव में सहस्राब्दी काल के बारे में सामान्य बाइबिल शिक्षण को प्रभावित नहीं करता है।

मुझे लगता है कि यह भी संभव है कि आप यहां दूर स्थित पर्वत श्रृंखलाओं की उपमा का उपयोग कर सकते हैं। यहजेकेल यहां जो चित्रित कर रहा है वह कुछ ऐसा है, जो प्रतीकात्मक तरीके से भविष्य को एक साथ जोड़ता है, जहां बीच में समय का अंतराल हो सकता है, लेकिन सभी तरह से एक तस्वीर में मिश्रित हो जाते हैं। दूसरे शब्दों में, ईजेकील उन आध्यात्मिक आशीर्वादों का वर्णन कर सकता है जिन्हें ईश्वर चर्च, सहस्राब्दी या शाश्वत राज्य में लाने जा रहा है। भगवान अपने लोगों के साथ काम करना जारी रखेंगे; वह अपने

लोगों के बीच में रहने जा रहा है और वह ऐसा चर्च में करने जा रहा है, वह ऐसा सहस्राब्दि काल में करने जा रहा है, और वह ऐसा शाश्वत अवस्था में करने जा रहा है। बेशक, यह थोड़े अलग तरीकों से होगा, लेकिन यह सब शायद अपने लोगों के साथ भगवान के भविष्य के काम की इस समग्र, प्रतीकात्मक तस्वीर में एक साथ लाया गया है।

यहेजकेल की व्याख्या करने के 3 तरीके 40-48

तो मुझे ऐसा लगता है कि इस खंड को देखने के तीन सामान्य तरीके हैं: आप कह सकते हैं, पहला, यह एक शाब्दिक तस्वीर है जिसे सहस्राब्दी काल में पूरा किया जाना है। यह एक संभावना है। दूसरी संभावना यह है कि यह सत्य का एक प्रतीकात्मक चित्रण है कि ईश्वर अपने लोगों के साथ नहीं है। उसके महान उद्देश्य हैं जिन्हें वह भविष्य में भी पूरा करेगा, और उसकी झलक यहाँ प्रतीकात्मक भाषा में दिखाई देती है। तो यह प्रतीकात्मक दृष्टिकोण है। तीसरा दृष्टिकोण यह होगा कि यह ईश्वर के लोगों के भविष्य की एक दृष्टि है, जिसके कुछ पहलुओं का भौतिक, शाब्दिक अर्थ है और कुछ पहलुओं का आध्यात्मिक, प्रतीकात्मक अर्थ है। यह पहले दो पहलुओं को भौतिक, शाब्दिक अर्थ वाले कुछ पहलुओं और प्रतीकात्मक अर्थ वाले कुछ पहलुओं के साथ जोड़ता है।

1. कुछ शाब्दिक और कुछ प्रतीकात्मक समग्र व्याख्या अब ये तीन संभावनाएँ हैं। पहला, शाब्दिक, मुझे लगता है कि उस दृष्टिकोण के पक्ष में विशिष्ट विवरण हैं। शाब्दिक दृष्टि से समस्या नदी का चित्र है। नदी प्रतीकात्मक दृष्टिकोण का पक्ष लेती प्रतीत होती है। नदी एक महत्वपूर्ण विशेषता है, लेकिन इसे इज़राइल की पूजा की शाब्दिक तस्वीर में फिट करना कठिन है। यह शाब्दिक नदी से अधिक प्रतीकात्मक प्रतीत होती है। मुझे ऐसा लगता है कि नदी की एक उचित व्याख्या यह है कि यह जीवन की एक प्रतीकात्मक तस्वीर है जो वेदी से आती है और वेदी से निकलती है। तब मैं कहूँगा कि यह बैलों और बकरियों का खून नहीं है जो ईसा मसीह की मृत्यु का प्रतीक है। यह वह प्रभाव है जो क्रूस पर मसीह के कार्य

से प्रवाहित होता है। वह प्रभाव छोटे से शुरू हुआ; यह टखने तक गहरा था, और फिर यह रोम तक फैल गया और कुछ ही शताब्दियों में यह साम्राज्य का धर्म बन गया। तो इसका प्रभाव बढ़ गया। और आप राष्ट्रों के उपचार के लिए पत्ते देखते हैं, शायद ईसाई शिक्षाओं के लाभकारी प्रभाव। फिर भी दलदल अभी भी बना हुआ है; यह सार्वभौमिक नहीं है। यह सब कुछ पूरी तरह से नहीं बदलता है। लेकिन यह सुसमाचार संदेश के फैलते प्रभाव को दर्शाता है।

अब यदि आप नदी के साथ इस तरह का दृष्टिकोण अपनाते हैं, तो इसके बाकी हिस्सों के बारे में क्या होगा। वहां आप मनमाना भेद करने की समस्या में पड़ जाते हैं। आप उससे कैसे बचते हैं? यदि आप इसमें से कुछ को प्रतीकात्मक और कुछ को शाब्दिक के रूप में लेने जा रहे हैं, तो आप यह कैसे तय करेंगे कि कौन सा? मुझे यकीन नहीं है कि मेरे पास इसके लिए अंतिम उत्तर हैं। लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि इसके लिए जो दृष्टिकोण शायद सबसे अधिक कहा जा सकता है वह यह है कि इसमें से कुछ को शाब्दिक और कुछ को प्रतीकात्मक होने की अनुमति दी जाए। किसी को भी एक ही समय में, न केवल एक अवधि में, चर्च, सहस्राब्दी या शाश्वत राज्य की पूर्ति की अनुमति देनी चाहिए, बल्कि उसमें कुछ मिश्रण की संभावना भी देखनी चाहिए। आपके पास इस प्रकार का सम्मिश्रण है। इसे एक साथ रखने वाली प्राथमिक बात यह है कि भगवान अपने लोगों के बीच में काम करना जारी रखेंगे।

यहेजकेल 40-48 और प्रीमिलेनियलिज़्म अब वह प्रश्न जो पहले ही पूछा जा चुका है: कभी-कभी यह कहा जाता है कि मसीह की वापसी का प्रीमिलेनियल दृश्य जिसमें इस मंदिर का शाब्दिक तरीके से पुनर्निर्माण किया जाएगा, और बलिदान चढ़ाए जाएंगे, बलिदान की अंतिमता का उल्लंघन करता है ईसा मसीह का। तो फिर यह आरोप लगाया जाता है कि प्रीमिलेनियल शिक्षण सही नहीं हो सकता। मुझे उस पर संक्षेप में टिप्पणी करने दीजिए। मैं कहूंगा कि यह विचार कि सहस्राब्दी काल में बलिदानों को फिर से स्थापित किया जाएगा, मुख्य रूप से ईजेकील के इस मार्ग से लिया गया है। यह तब मुख्य रूप से इस निष्कर्ष पर

आधारित है कि ईजेकील में यह मार्ग सहस्राब्दी काल में पूजा की तस्वीर के लिए शाब्दिक है। मुझे नहीं लगता कि यह जेकेल के इस खंड से यह एक आवश्यक निष्कर्ष है। मुझे नहीं लगता कि यह मसीह की वापसी के पूर्वसहस्राब्दी दृष्टिकोण का एक आवश्यक घटक है। मुझे ऐसा लगता है कि यह जेकेल 36 और 37 में सहस्राब्दी को स्पष्ट रूप से सिखाया गया है, उदाहरण के लिए, हमने अभी देखा, जहां इज़राइल भूमि पर लौटेगा, राजा उन पर शासन करेगा और अपना अभयारण्य स्थापित करेगा। लेकिन वहां बलि पूजा की बहाली के बारे में कुछ नहीं कहा गया है। मुझे नहीं लगता कि सहस्राब्दी शिक्षण ईजेकील 40-48 पर आधारित है। सवाल यह है कि आप ईजेकील 40-48 को किस तरह से लेते हैं और आप इसे युगांतशास्त्र के प्रीमिलेनियल दृष्टिकोण में कैसे फिट कर सकते हैं? इसलिए, मुझे नहीं लगता कि सहस्राब्दी शिक्षण इन अध्यायों पर आधारित है और वे सहस्राब्दी में बलिदान पूजा की शाब्दिक तस्वीर देते हैं या नहीं। इसका इससे कोई लेना-देना नहीं हो सकता है कि मसीह की वापसी का पूर्वसहस्राब्दी दृष्टिकोण सही दृष्टिकोण है या नहीं।

एलिसन कॉन्ट्रा भविष्य के बलिदान

अब अपने उद्धरण पृष्ठ 60-61 देखें। ईजेकील में एलिसन : *द मैन एंड हिज मैसेज*, कहते हैं, "उन लोगों के लिए जो इस खंड को दैवीय रहस्योद्घाटन के रूप में गंभीरता से लेते हैं, न कि केवल ईजेकील के भविष्य के लिए दृष्टि के रूप में बंद कार्यक्रम के रूप में, बलिदान इसकी व्याख्या में एक वास्तविक सार प्रदान करते हैं। बलिदानों को प्रतीकात्मक बनाओ, और मंदिर भी प्रतीकात्मक हो जाता है। मंदिर को शाब्दिक रूप से लें, और हमें इस बात पर सहमत होना होगा कि सहस्राब्दी में जानवरों की बलि दी जाएगी। मुझे एक प्रतीकात्मक मंदिर में बलिदान के दर्शन में कोई कठिनाई नहीं है, क्योंकि यह ईजेकील के लिए गारंटी थी कि दैवीय मुक्ति के महान सिद्धांत समय के अंत तक अच्छे बने रहेंगे। लेकिन मुझे मजबूत सबूत की आवश्यकता है कि यह दृष्टिकोण - नए नियम के सबूतों के सभी महत्व के बावजूद - स्वीकार करे कि लेवीय बलिदानों को फिर से पेश किया जाएगा। संभवतः, वे सभी जो मंदिर को सहस्राब्दी मानते हैं और बलिदानों को शाब्दिक रूप से लेते हैं, स्कोफील्ड बाइबिल में इस कथन की सदस्यता लेंगे कि निस्संदेह ये प्रसाद स्मारक होंगे।

चढ़ावे के रूप में क्रूस की ओर पीछे मुड़कर देखने पर ठीक वैसे ही जैसे पुरानी वाचा के तहत क्रूस की ओर देखने वाले स्मारक थे। किसी भी मामले में पशु बलि में पाप को दूर करने की शक्ति नहीं थी। हालाँकि मैं उनकी ईमानदारी को पूरी तरह से पहचानता हूँ, फिर भी मुझे उनसे यह एहसास कराने की विनती करनी चाहिए कि जो लोग उनके साथ नहीं चल सकते, वे धर्मग्रंथों का तिरस्कार नहीं करते। वे इब्रानियों को इस अर्थ में पढ़ते हैं: बलिदानों के तहत हारून पुरोहिती का उन्मूलन अंतिम और हमेशा के लिए है। इसके अलावा, वे यह नहीं समझ पा रहे हैं कि जब रोटी और वाइन ने ईसाइयों की लगभग एक हजार पीढ़ियों की प्रतीकात्मक जरूरतों को पूरा कर दिया है तो मिलेनियम को और अधिक की आवश्यकता क्यों होगी। राजा वापस आ गया है, और प्रकृति पर से श्राप हटा लिया गया है। पशु प्राणियों को अब भी अपना जीवन क्यों देना चाहिए? तथ्य यह है कि अति-व्यवस्थावादी ईश्वर के रहस्योद्घाटन को विभाजित करने में सक्षम है, लेकिन इसकी पूर्णता को देखने में विफल रहा है। सबसे बढ़कर, वह यह महसूस करने में विफल रहता है कि यद्यपि ईश्वरीय रहस्योद्घाटन के प्रति मानवीय प्रतिक्रिया कम हो सकती है और प्रवाहित हो सकती है, रहस्योद्घाटन स्वयं कभी वापस नहीं आता है बल्कि हमेशा गहरा होता है।

अब से न तो कम ज्ञान होगा और न ही आशीर्वाद। वास्तव में, मुझे यह विश्वास करना कठिन लगता है कि इसका गंभीरता से मतलब है - जब मुझे बताया जाता है कि सभी के लिए, सभी स्थानों पर समान रूप से पूजा करने की हमारी वर्तमान स्वतंत्रता को एक ऐसी स्थिति से बदल दिया जाएगा जिसमें मनुष्य का पूजा करने का विशेषाधिकार उसके ऊपर निर्भर और मापित होगा। सांसारिक यरूशलेम से भौगोलिक संबंध। यह सुझाव कि सुपरसोनिक विमान तीर्थयात्रियों को यरूशलेम ला रहे हैं जबकि अन्य लोग टेलीविजन के माध्यम से अपनी पूजा सेवा साझा कर रहे हैं, दुखद है।" मैं नहीं जानता कि ये सुझाव किसने दिए, लेकिन निस्संदेह, किसी ने दिए होंगे। इसलिए एलिसन एक प्रीमिलेनियल दृष्टिकोण रखता है, लेकिन वह इसे पशु बलि की पुनर्स्थापना के रूप में देखने का काफी कड़ा विरोध करता है।

ईजेकील 40-48 की व्याख्या करने के लिए जेबी पायने के 5 तरीके जे. बार्टन पायने, एलिसन के ठीक नीचे, व्याख्या के लिए पांच प्रस्ताव देते हैं। वह कहते हैं, "पांच प्रस्तावित व्याख्याएं वर्तमान चर्चाओं पर हावी हैं। भविष्यवक्ता के शब्द, एक, अतीत के लिए एक भविष्यवाणी थे और वे शाब्दिक थे। शाब्दिकता की स्थिति. यह केवल ईजेकील की ओर से एक गलत निर्णय था। जिन योजनाओं के क्रियान्वित होने की उन्हें *आशा थी* /" तो पहला दृष्टिकोण, आलोचनात्मक दृष्टिकोण, शाब्दिक रूप से अतीत की भविष्यवाणी करता है, लेकिन यह पूरा नहीं हुआ। यह एक आलोचनात्मक दृष्टिकोण होगा.

"दो अतीत के लिए एक निषेधाज्ञा है, शाब्दिक, लेकिन लागू नहीं किया गया।" यह उस भविष्यवाणी से भिन्न है जिसे पूरा नहीं किया गया, यह एक निषेधाज्ञा है। शाब्दिक लेकिन क्रियान्वित नहीं किया गया। "एक इंजील स्थिति यह है कि, ईजेकील का आदेश, हालांकि वह इसे एक भविष्यवाणी के रूप में बताने से बचता है, भविष्यवक्ता का जोर लौटने वालों को निर्देश देने पर पड़ता है कि इसे कैसे बनाया जाए।" पायने का विचार है कि यह एक निर्देश है कि छठी शताब्दी ईसा पूर्व में निर्वासन के बाद का मंदिर कैसे बनाया जाना है। आप सूखी हड्डियाँ देखते हैं और अध्याय 36 निर्वासन से लौटा था। यह एक निषेधाज्ञा है. हालाँकि, जिस तरह से वह नदी की समस्या से निपटता है, क्या वह निषेधाज्ञा को अध्याय 40-46 के रूप में देखता है, छठी शताब्दी ईसा पूर्व के लिए जबकि अध्याय 47 और 48 जहां आपके पास नदी और भूमि का विभाजन है, वह देखता है सहस्राब्दी. इसलिए वह अध्याय 46 और 47 के बीच के खंड में विभाजित करेगा। पायने के लिए, अध्याय 47 और 48 सहस्राब्दी हैं। अध्याय 40-46 निर्वासन से लौटने वालों के लिए निषेधाज्ञा है लेकिन पूरा नहीं किया गया है।

"तीसरा दृष्टिकोण, वर्तमान और आलंकारिक की भविष्यवाणी।" दूसरे शब्दों में, यह इस बात की भविष्यवाणी है कि अभी क्या चल रहा है। यह ईसाई चर्च का प्रतीक है। वह "वर्तमान की भविष्यवाणी" को आलंकारिक और सहस्राब्दि के रूप में लेबल करता है या कम से कम यह उस स्थिति के अनुरूप है। ईसाई चर्च की पूजा का जानबूझकर प्रतीकात्मक वर्णन, हालांकि यह दृष्टिकोण सरल रूपक के समान है।

“चार भविष्य की एक भविष्यवाणी है, शाब्दिक रूप से, इसे सहस्राब्दि काल में रखती है। भविष्य की एक भविष्यवाणी, शाब्दिक रूप से, कुछ प्रीमिलेनियलिस्टों द्वारा रखी गई है। यह उन लोगों से जुड़ा है जो ईसा मसीह के दूसरे आगमन के लिए मंदिर के पुनर्निर्माण की तलाश में हैं। हालाँकि, इस दृष्टिकोण में भविष्य के मसीहा के मंदिर की पहचान शाब्दिक रक्त प्रायश्चित के अधिकारों से की जाती है, जो 43:20 में ईजेकील की संरचना की विशेषता है, फिर बेस्ली-मरे सही प्रतीत होते हैं जब वह कहते हैं कि इस दृष्टिकोण को नए नियम द्वारा चुनौती दी गई है। जैसा कि हम इब्रानियों 10:18 में पढ़ते हैं, हमारे प्रभु के प्रायश्चित ने ऐसे बलिदानों को हमेशा के लिए निरस्त कर दिया है।

"पांचवां, भविष्य, नए आकाश और नई पृथ्वी की एक आलंकारिक भविष्यवाणी।" अंतिम न्याय के बाद नए आकाश और नई पृथ्वी की एक तस्वीर। वह कहते हैं, यह एक सहस्राब्दि स्थिति है, लेकिन मुझे समझ नहीं आता कि इसे पूर्वसहस्राब्दि दृष्टिकोण के साथ समान रूप से सुसंगत क्यों नहीं बनाया जा सकता है। मुझे नहीं लगता कि यह आवश्यक रूप से सहस्राब्दी है, हालाँकि यह अक्सर सहस्राब्दी के लोगों द्वारा धारण किया जाता है। वास्तव में, जे. ओलिवर बसवेल का यह दृष्टिकोण है: नए आकाश, नई पृथ्वी प्रतीकात्मक हैं, और वह प्रीमिलेनियल हैं। कुछ लोग इसे भविष्य की भविष्यवाणी के रूप में देखते हैं, लेकिन फिर भी आलंकारिक है। वे अंतिम न्याय के बाद नए आकाश और नई पृथ्वी का चित्रण इस हद तक करते हैं कि इसके आवश्यक सत्य को नए युग में नई ईसाई व्यवस्था के लिए उपयुक्त रूपों के तहत मूर्त रूप दिया जाएगा (प्रकाशितवाक्य 21-22:5)। लेकिन फिर आपके पास प्रकाशितवाक्य 21:22 है, जो नए यरूशलेम में किसी भी मंदिर की अनुपस्थिति को बनाए रखता है। उपरोक्त तीन प्रस्तावों पर आपत्तियों के आलोक में, पिछली व्याख्या को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। इसके अलावा, स्वयं यहजेकेल ने स्पष्ट रूप से कहा, "उन्हें इस्राएल का घर, माप और नमूना दिखाओ, कि वे उसके सब नियमों को मानें, और उनका पालन करें" (यहेजकेल 43:10-11)। जिस पर एलिसन ने कहा, "क्या यह संभवतः भविष्यवक्ता के समय के अलावा किसी अन्य समय का उल्लेख कर सकता है?"



## बसवेल का दृष्टिकोण

एक और उद्धरण। बसवेल, *सिस्टमैटिक थियोलॉजी*, खंड 2 से अपने उद्धरणों के पृष्ठ 58 को देखें। वह कहते हैं, "यहेजकेल 40-48 में दो प्रकार की सामग्री को अलग करना मुश्किल है।" अब यह अनुच्छेद उनकी पुस्तक में कहां से लिया गया है, इसके संदर्भ में सामग्री दो प्रकार की होती है वर्णन और उपदेश। "यहेजकेल 40-48 में दो प्रकार की सामग्री को अलग करना मुश्किल है। अध्याय 40 स्पष्ट रूप से पूर्णता के विभाजन का हिस्सा है; अध्याय 41:7-11 निश्चित रूप से यहेजकेल के समकालीनों को संबोधित एक उपदेश है।" तो आप देखिए, अध्याय 40 विवरण होगा और अध्याय 41, चेतावनी, या उपदेश होगा। "41-42 का राजकुमार अपने लिए और सभी लोगों के लिए भेंट लाता है, लेकिन यह मसीहा नहीं है। क्योंकि यह इब्रानियों 7:27-28 का खंडन करेगा और यहेजकेल की भविष्यवाणी के इस खंड में अध्याय 41-47 और अन्य जगहों पर राजकुमार को फटकार लगाई गई है। इसलिए मुझे बहुत ही अस्थायी रूप से सुझाव देना चाहिए कि यहेजकेल 40-48 के निम्नलिखित भाग नए स्वर्ग और नई पृथ्वी की स्थितियों की भविष्यवाणी करते हैं। फिर वह अनुभागों को सूचीबद्ध करता है। "इसी तरह, मेरा सुझाव है कि निम्नलिखित भाग सीधे ईजेकील के समकालीनों को संबोधित हैं। जैसा कि मैंने ऊपर कहा है, सामग्री का यह वर्गीकरण बहुत अस्थायी है। इससे जुड़ी कठिनाइयां भी हैं। मुझे यह स्पष्ट करना चाहिए कि मेरा सुझाव है कि ईजेकील 40-48 में युगांतशास्त्रीय तर्क का संबंध नए स्वर्ग और नई पृथ्वी से है, यह प्रीमिलेनियल दृष्टिकोण के लिए किसी भी तरह से आवश्यक नहीं है। यह केवल एक सुझाव है जो मुझे लगता है कि स्वीकार्य है। मेरा मानना है कि यह सुझाव धर्मग्रंथों में पाए गए सभी आंकड़ों के अनुरूप है।

लेविते की समस्या क्या ईजेकील 40-48 की युगांतशास्त्रीय भविष्यवाणियां सहस्राब्दी में पूरी होंगी, जैसा कि अधिकांश प्रीमिलेनियल बाइबिल शिक्षक मानते हैं, या नए आकाश और नई पृथ्वी में, जैसा कि मैंने सुझाव दिया है, किसी भी मामले में, ईजेकील की भविष्यवाणी भविष्य में बलिदानों की अत्यधिक विस्तृत और गौरवशाली लेवीय प्रणाली की स्थापना को

कई बाइबिल छात्रों द्वारा एक समस्या के रूप में देखा जाता है। मैं समस्या के दो संभावित समाधान सुझाऊंगा, और इनमें से कोई भी वर्तमान में उपलब्ध सभी डेटा के साथ पूरी तरह से सुसंगत प्रतीत होगा। एक: पूजा का लेवीय रूप प्रभु द्वारा हमेशा के लिए मनाए जाने वाले एक रूप के रूप में स्थापित किया गया था। इसे सशक्त रूप से दर्शाया गया है और बार-बार दोहराया जाता है। फिर भी, पवित्र आत्मा से प्रेरित नए नियम के लेखकों को यह सिखाने में कोई कठिनाई नहीं है कि अनुष्ठान कानून मसीह में पूरा हुआ है। यह इब्रानियों की पत्री का मुख्य विषय है। जब हम अपने पापों के प्रायश्चित के रूप में मसीह के रक्त को स्वीकार करते हैं और सच्चे विश्वास के साथ प्रभु भोज का पालन करते हैं, तो हम फसह को वैसे ही मना रहे हैं जैसे भगवान ने हमारे दिनों में इसे मनाने का इरादा किया था। 1 कुरिन्थियों 5:7: मुझे ऐसा लगता है कि मसीह हमारे फसह के रूप में, यहजेकेल द्वारा नए आकाश और नई पृथ्वी की भविष्यवाणी करने की समझ के अनुरूप है, लेकिन उस समय भविष्यवाणी करना जब पूजा का उचित रूप लेवीय अनुष्ठान था, और उसे दिया गया है उस अनुष्ठान के संदर्भ में उनका दृष्टिकोण। इसे अत्यधिक बढ़ाया और महिमामंडित किया गया है। मुझे यह समझना काफी सुसंगत प्रतीत होता है कि जैसे फसह और पापबलि मसीह के प्रायश्चित में पूरे होते हैं, वैसे ही यहजेकेल की मंदिर की महिमा के बारे में भविष्यवाणियां भी हैं जो नए आकाश और नई पृथ्वी में पूरी होंगी। मसीह की तत्काल उपस्थिति के संदर्भ में और मुक्ति प्राप्त लोगों के साथ मसीह के समुदाय की पूर्ण प्रसन्नता के संदर्भ में। नए यरूशलेम में जॉन ने कोई मंदिर नहीं देखा, इसलिए नहीं कि वहां कोई नहीं था, बल्कि इसलिए कि, जैसा कि वह कहता है, सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर और मेमना ही मंदिर हैं।

“ दूसरी ओर, वे प्रीमिलेनियल बाइबिल शिक्षकों के विश्वास के साथ मतभेद में हैं, जो इस बात पर जोर देते हैं कि ईजेकील की दृष्टि द्वारा वर्णित पूजा के रूपों को या तो सहस्राब्दी में या नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में सचमुच पूरा किया जाना चाहिए। प्रीमिलेनियलिस्ट आम तौर पर समझाते हैं कि कलवारी में क्रूस पर ईसा मसीह के प्रायश्चित के पूरा होने के बाद लेविटकल अनुष्ठान की पुनर्स्थापना इस तथ्य का खंडन नहीं करेगी कि प्रायश्चित पूरा हो गया है, जितना कि प्रभु के भोज का हमारा वर्तमान उत्सव। जो लोग ईजेकील में वर्णित बलि

प्रणाली की शाब्दिक पुनर्स्थापना को मानते हैं, वे आम तौर पर इस बात से सहमत हैं कि महत्व केवल एक स्मारक हो सकता है और संभवतः उन बलिदानों का महत्व नहीं हो सकता है जो ईसा मसीह के आगमन की ओर इशारा करते हैं। जहाँ तक मेरी बात है, मैं इन दोनों व्याख्याओं में से पहली की ओर झुका हुआ हूँ, लेकिन मुझे बाद की व्याख्या में कुछ भी असंगत नहीं दिखता।”

मुझे लगता है कि मैं बसवेल के साथ भावनाओं को इस हद तक साझा करूँगा कि मुझे ऐसा लगे कि इस बात की अधिक संभावना है कि यहां यह बलिदान तत्व प्रतीकात्मक है बजाय कि इसे वस्तुतः बलिदानों की पुनर्स्थापना के रूप में लिया जाए। लेकिन मैं इस पर हठधर्मी नहीं बनूँगा। बसवेल कहते हैं, "मेरा झुकाव पूर्व की ओर है, लेकिन मुझे बाद में कुछ भी असंगत नहीं दिखता।" यदि बलिदानों को निश्चित रूप से एक स्मारक के अर्थ में पुनः स्थापित किया जाना है, तो वे मसीह के बलिदान की प्रभावकारिता से कुछ भी कम नहीं करते हैं। यह एक संभावना है, लेकिन एलिसन का कहना है कि रहस्योद्घाटन आगे बढ़ता है, यह पीछे नहीं मुड़ता है [उदाहरण के लिए, पुराने नियम के रूपों की ओर], और मुझे ऐसा लगता है कि यह बाकी पवित्रशास्त्र के अनुरूप है। यह एक कठिन प्रश्न है।

हालाँकि पायने वहाँ कुछ खंड देखता है जिसमें वह ईजेकील के समकालीनों को संबोधित करते हुए सूचीबद्ध करता है, मैं कहूँगा, बहुसंख्यक डिस्पेंसेशनल प्रीमिलेनियलिस्ट एक शाब्दिक भविष्यवाणी, भविष्य के सहस्राब्दी काल और स्मारक के रूप में बलिदानों की बहाली के पक्ष में होंगे। मुझे लगता है कि भविष्य की किसी भी समग्र तस्वीर में वर्तमान काल के तत्व शामिल होंगे और इसमें सहस्राब्दी काल, और नया स्वर्ग और नई पृथ्वी शामिल होगी। हालाँकि, ऐसा प्रतीत होता है कि यदि आप लेवियों और फिर सादोकाइट वंश के याजकों के उस कार्य को फिर से स्थापित करने जा रहे हैं तो इसके लिए पवित्रशास्त्र में कुछ आधार होना चाहिए। मुझे नहीं पता कि अब मंदिर के पुनर्निर्माण पर रोक लगाने के लिए कुछ है या नहीं क्योंकि मुझे नहीं लगता कि राजकुमार की तुलना मसीहा से की जा सकती है। तो, जैसा कि वहाँ वर्णित है, मसीहा कार्यात्मक भूमिका में कहां है? आपने इज़राइल में मंदिर के पुनर्निर्माण की योजना बनाने वाले कुछ लगभग भूमिगत आंदोलनों के बारे में

वास्तविक रिपोर्टें पढ़ी हैं, लेकिन मुझे नहीं पता कि उसमें कितना दम है; लेकिन मुझे आश्चर्य नहीं होगा अगर ऐसे लोग हैं और वे ईजेकील के इस खंड में इसका आधार बनाएंगे।

## नदी समस्या

मुझे लगता है कि नदी शाब्दिक स्थिति के लिए एक बड़ी समस्या है, और आप देखते हैं कि पायने इसके साथ क्या करती है। वह अध्याय 47 और 48 को सहस्राब्दी काल में धकेलता है और 40-46 को लेता है, जहां आपके पास मंदिर और अनुष्ठान, अधिकारी और पदाधिकारी हैं, निर्वासन के बाद। आप शायद दृष्टि के नदी वाले हिस्से को आगे की ओर धकेल सकते हैं। लेकिन मुझे यह दृश्य एक सतत चित्र जैसा लगता है। इसलिए, यह जानना कठिन है। क्या वह वैध है? यह इतिहास की अवधियों और भगवान के भविष्य के कार्य के मिश्रण की संभावना के साथ एक प्रतीकात्मक दिशा में जाता है। निश्चित रूप से, मुझे लगता है कि इस दृष्टिकोण की व्याख्या करना कठिन है।

मैंने पूर्वी गेट में प्रवेश करने की कोशिश कर रहे लोगों के बारे में कुछ कहानियाँ सुनी हैं, लेकिन अध्याय 44 में राजकुमार के आने तक पूर्वी गेट को बंद करने का संदर्भ है। आज येरुशलम में गोल्डन गेट कहा जाने वाला पूर्वी गेट अभी भी बंद है। अब वहां एनआईवी स्टडी बाइबल नोट कहता है, बाद में, लेकिन संभवतः विलंबित परंपरा के परिणामस्वरूप इसे सील कर दिया गया है। बात यह है कि, आप जानते हैं, आप इस कथन को यहाँ अध्याय 44 में पढ़ सकते हैं और बस यह समीकरण बना सकते हैं कि वर्तमान द्वार वही है जिसका वर्णन यहाँ किया जा रहा है, लेकिन याद रखें कि दीवार मध्य युग में किसी समय बनाई गई थी और यह एक दूरदर्शी मंदिर है। हो सकता है कि इन दोनों का वास्तव में एक-दूसरे से कोई लेना-देना न हो। हालाँकि, तथ्य यह है कि पूर्वी गेट को सील कर दिया गया है, मुझे यकीन नहीं है कि इसे वास्तव में कब सील किया गया था और इसका कारण क्या था, लेकिन यह किसी तरह से इस पाठ से संबंधित हो सकता है। मुझे लगता है कि आपको इसे यहां

कही गई बातों से जोड़ने में सावधानी बरतनी होगी। जाहिर है यह मौजूदा समय से अलग भूमिका है।

खैर , यह प्रमुख भविष्यवक्ताओं की इस सेमेस्टर की हमारी चर्चा को समाप्त करता है।

यह प्रमुख पैगंबरों पर डॉ. रॉबर्ट वेन्नॉय के पाठ्यक्रम का समापन व्याख्यान 30 है।

पेगे लैटूर्नेस द्वारा प्रतिलेखित  
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित  
डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा अंतिम संपादन  
डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा पुनः सुनाया गया